आईआईएम रायपुर का सातवां दीक्षांत आज, रक्षामंत्री निर्मला सीतारमन होंगी शामिल

कहानियां... जो बताती हैं जीवन में महत्वपूर्ण है प्रबंधन

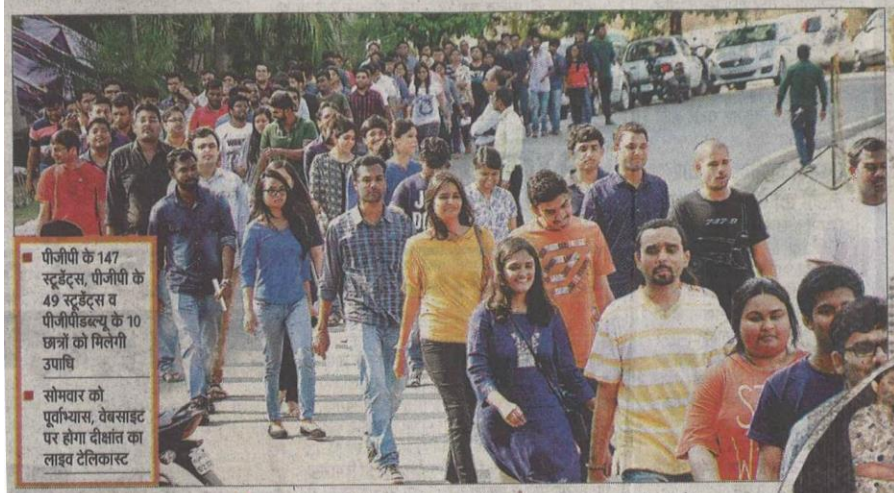

- पीजीपी के 147 स्टूडेंट्स, पीजीपी के 49 स्टूडेंट्स व पीजीपीडब्ल्यू के 10 छात्रों को मिलेगी उपाधि
- सोमवार को पूर्वाभ्यास, वेबसाइट पर होगा दीक्षांत का लाइव टेलिकास्ट

आईआईएम रायपुर का सातवां दीक्षांत समारोह मंगलवार को जीईसी के ऑडिटोरियम में संपन्न होगा। इसके एक दिन पूर्व सोमवार को उपाधि प्राप्त करने वाले छात्रों ने पूर्वाभ्यास किया। उपाधि लेते वक्त की पूरी प्रक्रिया छात्रों को बारीकी से समझाई गई।
आईआईएम की परंपरा का निर्वहन करते हुए छात्र गाउन में उपाधि लेंगे। देश की रक्षा मंत्री निर्मला सीतारमन मुख्य अतिथि रहेंगी। साथ ही प्रदेश के मुख्यमंत्री डॉ. रमन सिंह इस कार्यक्रम में शामिल रहेंगे।

रायपुर। सातवें दीक्षांत का हिस्सा बनने जा रहे छात्रों में से कई ऐसे भी हैं, जिनके लिए यहां तक पहुंचने की राह आसान नहीं रही। किसी ने कैंसर को मात देकर अपनी डिग्री हासिल की तो किसी ने विकलांगता के बाद भी अपना हौसला नहीं टूटने दिया। कई छात्र ऐसे भी रहे, जो भाषाई दिक्कतों से जूझते रहे। सातवें दीक्षांत में जानिए ऐसे ही विद्यार्थियों की कहानी, जो सीखाती है जीवन में मैनेजमेंट के फंडे।

एग्जाम के एक हफ्ते पहले मालूम चला कैंसर है: जया गुप्ता पीजीपीडब्ल्यूई की स्टूडेंट रही हैं। उन्होंने 2015 में जून में रायपुर आईआईएम में एडमिशन लिया। चार महीने बाद पता चला की उसे कैंसर है। जब यह बात पता चली उसके कुछ दिन बाद ही इग्जाम थे। वह अपने आप में बहुत नर्वस थीं। इस खतरनाक बीमारी के बाद क्या होगा, यह सोचकर ही परेशान रहने लगी। लेकिन उसके हौसले ने बीमारी को हरा दिया। कैंसर जैसे डिसीस से लड़कर कई ऑपरेशन व किमो के प्रोसेस से गुजरने के बाद जब 2016 में रेडिएशन से बाहर आई तो फिर से अपनी पढ़ाई पूरी करने का मन बना लिया। पूरे मेहनत घर व आईआईएम रायपुर के सहयोग से अपनी पढ़ाई अच्छे तरीके से खत्म की। जया ने 1997 में नागपुर से इंजीनियरिंग पूरी की थी, लेकिन पढ़ाई करने का ऐसा जुनून की पढ़ाई के इतने वर्षों बाद भी कैट का पेपर देकर आईआईएम रायपुर में एडमिशन प्राप्त किया।

एक्सचेंज प्रोग्राम से मिला फायदा

इसी प्रोग्राम के तहत निखिल का चयन वीस के लिए हुआ। जहां का कल्चर व बिजनेस मॉडल जानने समझने की कोशिश की। निखिल बताते हैं, वीस यूरोप का डेवेलप्ड कंट्री है, जिसके कारण लिट्रेसी और बिजनेस के लिए इंफ्रास्ट्रक्चर पहले से ही है। यहां के मॉडल अच्छे से विकसित किए गए हैं। स्टडी के दौरान वीस की कई सिटी भी हमने घुमी। सभी काफी विनम्र रहते हैं। काम के प्रति इमानदार भी हैं।

विकलांगता को मात दे हासिल करेंगे मैनेजमेंट की उपाधि

2016-18 बैच के मलिकांत गुंटूर आंध्रप्रदेश से हैं। वे पैर से दिव्यांग हैं। उन्होंने बीसीए से ग्रेजुएशन करके रायपुर आईआईएम में एडमिशन प्राप्त किया। वे बताते हैं, पढ़ने का शौक हमेशा से रहा है। पैर से विकलांगता ने पढ़ाई में अधिक रूकावट नहीं डाली। घर वालों का हमेशा सहयोग प्राप्त हुआ, इसलिए कोई खास दिक्कत नहीं हुई। मैनेजमेंट के क्षेत्र में कुछ बेहतर कर वे समाज को यह संदेश देना चाहते हैं कि अगर मन में चाह हो तो कोई भी चीज बाधा नहीं बन सकती।

भाषाई दिक्कतें सिखनी पड़ी स्पेनिश

इस संस्था से एक्सचेंज प्रोग्राम के तहत अलग-अलग देश जाकर वहां की इकोनॉमिकली व सोशली इनवायरमेंट की स्टडी करने वाले स्टूडेंट्स भी इस दीक्षांत में अपनी डिग्री लेने वाले हैं। एक्सचेंज प्रोग्राम में मेक्सिको जाने वाले नखांकुर रॉय बताते हैं, जैसे भारत में अलग-अलग संस्कृति मिलेगी, उसी प्रकार मेक्सिको में भी कई कल्चर हैं। जो यूनीक भी है। वहां पहले से ही इकोनॉमिकली इंफ्रास्ट्रक्चर डेवलप्ड है, जिसके कारण वहां की इकोनॉमिक कंडिशन काफी अच्छी है। वहां लैंग्वेज की भी दिक्कात आई, क्योंकि वहां इंग्लिश बहुत कम चलती है। दो महीने के प्रोग्राम में बहुत कुछ सीखना था। स्पेनिश लैंग्वेज सीख वहां पर कई बड़े कंपनी के सीईओ के क्लासेस अटेंड किया। साथ ही वर्ल्ड लेवल के कंपनी के केस स्टडी भी किए ,जहां बहुत कुछ सीखने के लिए मिला। जो हमें आगे चलकर बहुत मदद करने वाली है।

लखनऊ की जुड़वा बहनें एक साथ लेंगी डिग्री

इस दीक्षांत में एक और मजेदार बात यह है की इस बैच में लखनऊ की जुड़वा बहनों ने एक साथ इस संस्थान में एडमिशन लिया, एक साथ पढ़ाई की अब वे दोनों एक साथ ही अपनी डिग्री लेने वाले हैं। ये बहनें हैं वर्सिका और वर्णिका। वे 2016-2018 बैच की स्टूडेंट हैं। जिन्होंने सफल तरीके से अपनी पढ़ाई आईआईएम रायपुर से पूरी की।

Haribhoomi, 10th April 2018, P.13